© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 06 | July - September 2018

बाबा नागार्जुन के कथासाहित्य में स्त्री–विमर्श एक अध्ययन

डॉ0 राम अधार सिंह यादव
एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी–विभाग
एस0 एम0 कॉलेज चन्दौसी (सम्भल)

मैथिली और हिन्दी के यशस्वी बाबा नागार्जुन आधुनिक युग के नवचेतना के कथाकार है। उन्होंने एक ओर तो वर्ग संघर्ष से संत्रस्त मानवों के प्रति गहन संवेदना व्यक्त करते हुए इसके लिए उत्तरदायी व्यवस्था के विरूद्ध तीव्र आक्रोश प्रकट किया है तो दूसरी ओर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बहुसंख्यक जनता को अभावों कष्टों एवं पीड़ाओं में लीन देखकर स्वदेशी शासको के अनुचित कार्यो के प्रति प्रखर एवं उत्कृष्ट व्यंगय वाणों की बौछार की है। समाज की यंत्रणाओ और पीड़ाओं से नर–नारी के उत्थान के लिए संघर्षरत सर्वहारा वर्ग का स्तवन किया है।

सृष्टि के आरम्भ से ही नारी–जीवन की धारा पुरूष के आकर्षण और उपेक्षा के दो पाटो के बीच प्रवाहमान रही हैं। उसने मानव–जीवन के सभी क्षेत्रो को अपनी दया, करूणा, ममता, माया तथा अगाध विश्वास से अभिषिक्त है। नारी प्रेरणा–शक्ति बनी है पुरूष जीवन के लिए। नारी समस्त मानवीय सौन्दर्य एवं चेतना की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति है साथ ही सृष्टि का मूल भी। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार "पुरूष स्वभावतः निःसंग व तटस्थ होता है नारी ही उसमें आसक्ति उत्पन्न कर उसे नव–निर्माता के प्रति उन्मुख करती है। पुरूष अपनी पुरूष प्रकृति के कारण द्वन्द्व रहित हो सकता है लेकिन नारी अतिशय भावुकता के कारण सदैव द्वन्द्वोंमुखी रहती है। इसलिए पुरूषमुक्त है और नारीबद्ध।"1

यद्यपि मैथिलीशरण गुप्त के लिए नारी "आंचल में दूध और आखों में पानी"2 लिए त्याग की साकार प्रतिमा है। इधर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी – "नारी देह वह स्पर्श मणि है जो प्रत्येक ईट पत्थर को सोना बना देती है।"3 कहकर नारी को मणि स्वरूप मानते है। तात्पर्य यह है कि नारी जगत में दृष्टिगत भिन्नता का आधार केवल वाह्य उपादान है आन्तरिक भेद नहीं। यही कारण है कि प्रत्येक नारी भावना संसार में लगभग एक जैसा औदार्य सहनशीलता का भाव परिलक्षित होता है।

नागार्जुन के उपन्यासो में अधिकांश नारियों का जीवन वैधव्य पूर्ण रहा है भारतीय समाजिक व्यवस्था इन नारियों के प्रति कितनी क्रूर रही है इनके उपन्यासो में कही न कही लोक और शास्त्र द्वारा प्रताडित नारी ही विद्यमान हैं। इन विधवाओ में रतिनाथ की चाची, दमयन्ती, चन्द्रमुखी, सुशीला, बलचनमा की मॉ, तथा दादी, रामेश्वरी, मामी, माया, भुवन, चम्पा, उगनी आदि उल्लेखनीय है। सधवा स्त्रीयों की भी दशा अनेक सामाजिक कुरीतयों के कारण बड़ी दयनीय है।

पाश्चात्य प्रभाव और बदलती हुई परिस्थितियों ने नारी को आत्म निर्भर होने की दिशा में प्रेरित किया है। जनवादी चेतना से सम्पन्न नागार्जुन नारी–स्वतंत्रता एवं उसके आत्मनिर्भर होने के हिमायती है। उनके उपन्यासों की नारी 'अहं' के प्रति जागरूक रहती है। 'वरूण के बेटे' उन्यास की मधुरी अपने ससुर के अनाचारो से तंग आकर तथा पति से सुरक्षा न मिलने के कारण मैके आ जाती है। उसका अपने पति को तलाक देना, दूसरा विवाह करने तथा अकेले रहने का मन बना लेना। परम्परागत सामाजिक मान्यताओं में अविश्वास और नवीन विचारो में उसके विश्वास को प्रकट करता है। नारी का यह सर्वथा नूतन रूप परम्परागत नारी चिन्तन को एक झटका देता है। वह कहती है– तो इसमें क्या हर्ज है हूजूर! जिन्दगी और जहान औरतो के लिए नहीं है क्या?"4 मधुरी का यही आत्मबल आगे चलकर किसानो को जमीदारो के शोषण से मुक्त कराने का आंदोलन की आग में तपकर और भी अधिक सशक्त हो जाता है।

नागार्जुन की दृष्टि में देश का विकास तभी सम्भव है जब हम नारियो को साथ लेकर आगे बढेगें। कुम्भीपाक उपन्यास के राय साहब के शब्दो में–"आज भी स्त्रियो को साथ लिए बिना हम आगे नहीं बढ़ेगें।"5 उपन्यासकार नारी को अपना वर स्वयं चुनने को अधिकार देने के पक्षधर है। यह नारी के प्रगतिशील दृष्टिकोण का परिचायक हैं 'हीरक जयन्ती' उपन्यास में ललन का अपनी पत्नी का यह कथन "पढ लिखकर काम करेगी, आप अपना दूल्हा खोज लेगी।।"6 इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि नारी को स्वतंत्र रूप से वर चुनने की अवधारणा को पुष्ट करता है। इस प्रकार से उपन्यासकार ने नारी शिक्षा, आर्थिक स्वावलम्बन, समानता तथा स्वतंत्रता का ही पक्षधर है।

मध्यमवर्गीय परिवारों में नारी की पुरानी पीढी आज भी शोषित है किन्तु नई पीढी में स्वतंत्रता के बाद पर्याप्त परिवर्तन हुआ है। नारी को आज समान अधिकार प्राप्त हुए है फिर भी वह परम्परागत कडियो से जकड़ी हुई है। इन बन्धनो को तोड़ने के लिए आज की नारी बेचैन है। स्वतंत्रता संग्राम, पाश्चात्य शिक्षा एवं संस्कृति का प्रभाव, औद्योगिकरण शिक्षा–प्रसार, समाजवादी विज्ञान एवं सुधारवादी आन्दोलन आदि ने नारी को प्रभावित किया। आज वह जीवन की नई दिशा ग्रहण कर रही है।

नागार्जुन ने रूढवादी समाज में विधवाओ के यातनापूर्ण जीवन को नजदीक से देखा था। उनके उपन्यास 'रतिनाथ की चाची' 'दुख मोचन' और 'उग्रतारा' में विधवा–जीवन का सविस्तार वर्णन हैं लेखक ने इस समस्या का समाधान पुनर्विवाह अथवा विधवा विवाह के माध्यम से किया है। दुःख मोचन में उपन्यासकार ने माया और कपिल का अन्तर्जातीय विधवा–विवाह कराकर विधवा जीवन का उद्धार किया है। इस प्रगतिशील विचार के सम्बंध में गांव के अन्य व्यक्ति अपने मत को व्यक्त करते हैं, "विधवा लड़की ने रंडुवा लड़के से सम्बंध कर लिया तो क्या बुरा किया? इधर–उधर भटकती और भ्रष्ट होती तो गाँव कुल का नाम डुबाती। वह

अच्छा होता कि यह अच्छा हुआ।"7 उग्रतारा की उगनी भी विधवा होते हुए भी कामेश्वर से विवाह कर भभीखन सिंह के साथ व्यतीत कर रहे नारकीय जीवन से त्राण पा जाती है।"

'बलचनवा' उपन्यास में बलचनवा की मॉ आज के युग की ऐसी नारी है जो अपने पुत्र के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हुई परम्परावादी मॉ के रूप में दिखाई पड़ती है। दूसरी ओर वही बलचनवा के भीतर प्रगतिशील चेतना को भी अंकुरित करती है। जमीदार के क्रूर प्रहारो से अपनी बेटी की अस्मत की रक्षा करती हुई वह अपने पुत्र को शिक्षा देती है– "बबुआ बलचनवा! मर जाना लाख गुना अच्छा है मगर इज्जत का सौदा करना अच्छा नही।"8 यह कथन उस नारी के स्वाभिमान एवं कष्ट–सहन की अपार शक्ति का प्रमाण है। 'रतिमाथ की चाची' की गौरी विधवा होने पर भी देवर से गर्भ धारण करने के बाद समाज की क्रूरता से बचने के लिए अपने मॉ के पास जाती है क्योंकि मॉ लड़की का कवच बनकर मुसीबतो को अपने ऊपर ले लेगी। 'पारो उपन्यास' की पार्वती की मॉ भी बेटी की सहायता के लिए सदैव तैयार रहती है।

नारी पुरूष के अधीन न रहकर आर्थिक रूप में स्वालम्बी बनना चाहती है नागार्जुन के उपन्यासो में अधिकांश नारियो में काम करके स्वावलम्बी बनने की छटपटाहट दिखाई देती है। इसलिए वे सामाजिक परम्पराओ से जूझते हुए भी आत्म विश्वास का परिचय देती है। और श्रम करते हुए जीवन व्यतीत करती है। लेखक का विचार है कि आर्थिक अभाव के कारण नारी को धूर्त लोगो के सामने घुटने टेकने के लिए बाध्य होना पड़ता है। और वे जीवन पर्यन्त नरक की यातनाएँ भोगती है। कुम्भीपाक उपन्यास में भुवन वेश्या का नारकी जीवन व्यतीत करने के बाद टाइपराइटर खरीद लेती है। साथ ही 'गृह शिल्प कुटीर' नामक दुकान खोल कर आचार 'पापड और बडिया बेचकर' वह श्रम का उचित मूल्य प्राप्त कर सम्माननीय ढंग से अपना जीवन व्यतीत करती है।

बलचनवा उपन्यास का नायक नारी की आर्थिक स्वतंत्रता को अभिव्यक्त करता हुआ कहता है–"अपनी मॉ बहिनो और बहु–बेटियों के हाथ पैर हमारे यहाँ छूने मसलने या नाचने थिरकने का सामान नहीं हुआ करते, हमारी जिंदगी का सहारा है वे हाथ–पैर।"9 इस कथन से स्पष्ठ है कि नागार्जुन के नारी पात्र भी पुरूषों की तरह श्रम में विश्वास करते है। और सम्मान जनक जीवन जीना उन्हे स्वीकार्य है। रतिनाथ की चाची की गौरी वैधव्यपूर्ण जीवन जीते हुए समाज की समस्त क्रूरता को सहन करती हुई मेहनत की रोटी खाती हुई है। अपने पुत्र उमानाथ के विवाह पर दो सौ रूपये खर्च करती है।

'नयी पौध' की रामेसरी सात बहने है। इनके पिता खोखा पण्डित एक ओर धर्म की दुहाई देते है तो दूसरी ओर धन के लोभ में छः पुत्रियो को बेचकर 4300 रूपए लेने में संकोच नही करते। गुंगे, लंगड़े, बौडम, आदमखोर आदि से ब्याह कर देता है। रामेश्वरी को छोड़कर सभी बहनो को बेच देता है। वैधव्य से दुःखी रामेश्वरी ने ममता का मक्खन और स्नेह की सुधा पिलाकर बिसेसरी को बड़ा किया है। बिसेसरी को लेकर

रामेसरी अपने पिता खोखा पंडित के यहाँ आकर रहने लगती है। वहाँ 'बेटी बेचवा' के रूप में प्रसिद्ध खोखा पंडित धन के लोभ में अपनी धेवती का विवाह साठ साल के चतुरा चौधरी से तय कर देता है तो सोचती है–

"लड़की के जीवन को धूल में मिलाने का उसे क्या अधिकार है? बाबा (पिता)को यह क्या हो गया है? दूल्हे को आने तो दो, उस बूढे के माथे पर अंगार डाल दूँ तो रामेसरी मेरा नाम नहीं। एक बूढ़ा मेरी लड़की की माँग भरेगा, मुँह झुलसा दूँगी मरदुए का।"10 उसका यह सोचना रामेसरी का विसेसरी के प्रति अपार 'ममता' का ही परिचायक है। अन्त में रामेसरी की इच्छा व प्रयास से बिसेसरी का विवाह एक प्रगतिशील युवक वाचस्पति से हो जाता है। वह जीवन भर खुश रहती है। समाज में व्याप्त रूढियों परम्पराओं को तोडकर समाज के समक्ष विकासोन्मुख चेतना का परिचय दिया हैं

'वरूण के बेटे' उपन्यास की मधुरी अपने ससुराली जनो के प्रति उदार नही बनती क्योंकि उसकी दृष्टि में पतिव्रत धर्म से कही अधिक महत्वपूर्ण नारी धर्म अथवा मानव धर्म है। मधुरी नारी के स्वाभिमान की रक्षा के लिए खुशी–खुशी अपना घर–वर छोड़ देती है। वह अपने ससुर की लात–बात सहन नही करती है।"11 उसका मानना है कि नारी पहले नारी है और बाद में किसी की पत्नी इस प्रकार मधुरी के चरित्र में एक नया मानववाद तथा नारी जागरण का स्वर सुनाई पड़ता है। 'उग्रतारा' उपन्यास में उगली भी भभीखन को भी अपना पति स्वीकार नहीं करती है। अपने पूर्व प्रेमी कामेश्वर सिंह के साथ भाग जाती है।"12 वह नारी धर्म के आगे पतिव्रत धर्म की उपेक्षा करने में अपना हिंत समझती है। उधर कामेश्वर 'सिंह' केवल उगनी को ही नही अपनाता बल्कि उसके पेट में पल रहे चार माह के बच्चे को भी सहर्ष अपना लेता है। उपन्यास का नायक कामेश्वर 'सिंह' प्रगतिशील वर्ग का साहसी प्रतिनिधि है।

'रतिनाथ की चाची' की गौरी अपने देवर जयनाथ की कामवासना का शिकार होकर आजीवन सामाजिक तिरस्कार की अग्नि में जलती रहती है समाजिक विषमता और स्वार्थपरता ने गौरी के जीवन को और भी कष्टमय बना दिया है। चाची जब जयनाथ से अवैध गर्भ धारण कर लेती है तो गॉव का पूरा समाज उसके जीवन को और भी अधिक कष्टमय बना देता है वह मॉ के सहयोग से गर्भ पात करा देती है। मॉ के घर वह उस मानसिक पीड़ा का अनुभव नही करती जितना वापस शंभुकरपुर में करती है। पति के बरसी पर किसी भी ब्राहम्ण को खाने के लिए जाने से रोककर गौरी के प्रति क्रूरतम व्यवहार का परिचय देता है। उसका पुत्र उमानाथ भी उसके साथ बुरा व्यवहार करता है। देवर जयनाथ द्वारा गौरी से अमृत पीने का मजाक करना जो उसकी पीड़ा की धारा को और भी बलवती बना देता है वह कहती है "किसी भी युग में स्त्री को अमृत पीने का सुयोग अवसर नहीं मिला। पुरूष को अमृत पिलाकर स्वयं वह विषपान करती आई है। जाने दो तुम यह सब क्या समझोगे।"13 इस प्रकार समाजिक बहिष्कार, तिरष्कार, और घुटन के कारण एक नारी का सम्पूर्ण जीवन एक दुःखभरी कहानी बनकर रह जाता है।

नागार्जुन ने अपने उपन्यासो में नारी जीवन को एक नई दिशा प्रदान की है। नारी के जीवन में बेमेल विवाह के कारण घटने वाली विसंगतियो को आधुनिक शिक्षा के प्रकाश में व्याख्या कर उनका क्रांतिकारी हल प्रस्तुत किया है। नारी जीवन में वैधव्य सबसे बड़ा अभिशाप है। नारी पुरूष के अभाव में निराश्रित होकर अनचाहे लोगो का शिकार होती है। विधवा समस्या का हल उसके पुनर्विवाह में ही माना है। माधुरी तो समाज की जर्जर मान्यता "पति परमेश्वर होता है" पर थूकती है और अपने ससुराल वालो के अमानवीय व्यवहार को ठुकराती है। नागार्जुन अपने उपन्यासो में नारी संगठन को अधिक महत्व दिया है। नारी पात्र आधुनिक चेतना से युक्त है।

जो कि अपने वर्ग की शोषित महिलाओ की अपने परिवार का सदस्य बनाकर सहायता करती है। उन्हे समाजिक सम्मान देकर उनके चरित्र की रक्षा करती है। यह सम्मान हर शोषित और पिड़ित नारी को नारी द्वारा दिया जाये। जिससे उसके सामाजिक अस्तित्व की रक्षा हो सके।

सन्दर्भ सूचीः

1– वाणभटट् की आत्मकथा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी राजकमल प्रकाशन दिल्ली 1973 पृष्ठ 145

2– यशोधरा मैथिलीशरण गुप्त 1933 पृष्ठ 52

3– वाणभटट् की आत्मकथा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी राजकमल प्रकाशन दिल्ली 1973 पृष्ठ 172

4– नागार्जुन–'वरूण के बेटे' वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 1984 पृष्ठ 124

5– नागार्जुन 'कुम्भीपाक' राजकमल प्रकाशन दिल्ली 1987 पृष्ठ 131

6– नागार्जुन हीरक जयन्ती अभिनन्दन आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली 1962 पृष्ठ 92

7– नागार्जुन दुःखमोचन राजकमल प्रकाशन दिल्ली 1989 पृष्ठ 99

8– नागार्जुन बलचनवा वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 1989 पृष्ठ 79

9– नागार्जुन बलचनवा वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 1989 पृष्ठ 155

10–नागार्जुन नमी पौध राजकमल प्रकाशन दिल्ली 1989 पृष्ठ 07

11–नागार्जुन वरूण के बेटे वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 1984 पृष्ठ 111

12–नागार्जुन उग्रतारा राजकमल प्रकाशन दिल्ली 1987 पृष्ठ 103

13–नागार्जुन रचिनाथ की चाची, यात्री प्रकाशन पटना 1977 पृष्ठ 98